Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

जांजगीर-चांपा जिले की ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया की स्थिति

[1]सुनील साहू, [2]डॉ. सुचि शर्मा
[1]शोधार्थी, [2]सहायक प्राध्यापक
[1,2]सामाजिक विज्ञान विभाग (अर्थशास्त्र), डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तीसगढ़

सारांश

स्वास्थ्य किसी भी समाज के सामाजिक और आर्थिक विकास का मूल आधार है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का स्वास्थ्य परिवार की संपूर्ण जीवन-शैली और अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करता है। ग्रामीण महिलाएँ न केवल परिवार की देखभाल करती हैं, बल्कि कृषि, पशुपालन, घरेलू कार्यों तथा छोटे-छोटे आर्थिक कार्यकलापों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यदि महिलाओं का स्वास्थ्य सुदृढ़ नहीं है, तो यह उनकी कार्यक्षमता, उत्पादनशीलता और आर्थिक स्थिति को सीधे प्रभावित करता है।

मुख्य शब्द- एनीमिया, उत्पादन शीलता कार्य क्षमता

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य में, विशेष रूप से जांजगीर-चांपा जिले के अकलतरा ब्लॉक की ग्रामीण महिलाओं में स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएँ अत्यधिक गंभीर हैं। इनमें से एनीमिया (रक्ताल्पता) सबसे व्यापक और गंभीर समस्या के रूप में सामने आती है। एनीमिया से पीड़ित महिलाएँ शारीरिक कमजोरी, थकान, कार्यक्षमता में कमी तथा मातृत्व संबंधी जटिलताओं से ग्रसित रहती हैं। इसका प्रत्यक्ष असर उनके परिवार की आय, बच्चों के स्वास्थ्य और समग्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है, ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया का प्रचलन (Prevalence) – कई राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अध्ययनों ने दर्शाया है कि भारत में प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया की आनुपातिकता उच्च बनी हुई है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे (NFHS-5: 2019-21) और बाद के विश्लेषणों ने बताया कि कई राज्यों और ग्रामीण जिलों में एनीमिया का प्रसार बढ़ा या स्थिर रहा – खासकर आर्थिक रूप से पिछड़े (Aspirational) जिलों में। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि केवल शहरी-ग्रामीण अंतर ही नहीं, बल्कि जिलागत विविधता है.

कारक (Determinants) – 2020-2025 के अध्ययनों ने एनीमिया के बहु-कारक कारण उजागर किए हैं: ख़राब आहार और आयरन-घुलनशीलता वाले खाद्य पदार्थों की कमी, बार-बार गर्भधारण

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

और कम अंतराल वाली प्रेग्नेंसी, शारीरिक स्वास्थ्य (जैसे परजीवी संक्रमण, जंक्शनल स्वास्थ्य), सामाजिक-आर्थिक कमजोरियाँ (गरीबी, कम शिक्षा), और स्वास्थ सेवा पहुँच के मुद्दे। कुछ अध्ययनों ने यह भी रेखांकित किया कि केवल हेमोग्लोबिन माप आयरन-कमी का समुचित संकेत नहीं देता – अर्थात् रक्त में लोहे की कमी और अन्य कारण अलग से जाँचना जरूरी है.रुझान और नीति-प्रवर्तन (Trends & Programmatic Response) – 2020-2025 के कालखंड में अनेक नीतिगत पहलें (जैसे आयरन-फोलिक एसिड-सप्लीमेंटेशन, आंगनवाड़ी पोषण कार्यक्रम, खाद्य-परिरक्षण और सामुदायिक जागरूकता अभियान) जारी रहीं; पर कार्यक्रमों की प्रभावशीलता राज्य-स्तर तथा प्रोग्राम-लॉजिस्टिक्स पर निर्भर पाई गई – उदाहरण के लिए सप्लिमेंट का पालन (IFA adherence), आपूर्ति श्रृंखला और निगरानी की कमी कई क्षेत्रों में बाधक रही। कुछ हालिया अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि केवल सप्लीमेंट देना पर्याप्त नहीं है – आहार विविधता, महिला-शिक्षा, एवं सामाजिक हस्तक्षेप भी जरूरी हैं।क्षेत्रीय/सामुदायिक अध्ययनों के निष्कर्ष (Local studies) – 2020-2024 में प्रकाशित कई समुदाय-आधारित अध्ययन (ग्रामीण क्लस्टर में) ने स्थानीय जोखिम-प्रवर्तकों–जैसे भोजन की उपलब्धता, पारंपरिक आहार-प्रथाएँ, घरेलू-रोकथाम के विज्ञान, और स्वास्थ्य-सेवा तक पहुँच–का विस्तृत वर्णन किया। कुछ अध्ययनों ने दर्शाया कि किशोरी-गुरप तथा नवविवाहित/गर्भवती महिलाओं में एनीमिया की दर विशेष रूप से अधिक है, जिससे मातृ-शिशु परिणामों पर नकारात्मक प्रभाव का जोखिम है.शोध-गत अंतर (Gaps) और भविष्य के सुझाव – 2020-2025 के साहित्य से स्पष्ट होता है कि तीन प्रमुख क्षेत्रों में और काम चाहिए: (1) लोहे के अभाव का सटीक जैव-रसायनिक आकलन (केवल Hb की बजाय Ferritin/Iron markers सहित), (2) इंटरवेंशन अध्ययन जो आहार, सप्रेम अनुशासन और सामाजिक व्यवहारिक घटकों को एक साथ जोड़ें, और (3) जिलागत-स्तर पर दीर्घकालिक निगरानी ताकि कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन हो सके। इसके अलावा, पुरुष-सहभागिता और परिवार-स्तरीय पोषण-शिक्षा जैसे सामाजिक पहलुओं पर और प्रमाणात्मक शोध की ज़रूरत है।

अध्ययन का उद्देश्य -

- अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति का विश्लेषण करना।
- अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं में एनिमिया की स्थिति का विश्लेषण करना।
- अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया के प्रभाव का विश्लेषण करना।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक आंकड़े किए गए हैं। जिनका विश्लेषण आयु और शिक्षा के आधार पर किया गया है।आकड़ों की विश्लेषण हेतु प्रतिशत वृद्धि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण

जांजगीर-चांपा जिला, छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ ग्रामीण आबादी की संख्या अधिक है। यहाँ की महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक और पोषण संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना करती हैं। एनीमिया इस जिले की ग्रामीण महिलाओं में सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है।कुल मिलाकर, जांजगीर-चांपा जिले की ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया की स्थिति एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जिसके लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाओं, पोषण सुधार, और सामुदायिक स्तर पर जागरूकता की अत्यधिक आवश्यकता है।यह तालिका जांजगीर-चांपा जिले की ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया की स्थिति को दर्शाती है। इसमें विभिन्न आयामों पर आधारित तालिकाएँ दी गई हैं।

तालिका

समग्र वितरण

सूचक	संख्या	प्रतिशत
कुल एनीमिक	414	69.0
गैर-एनीमिक	186	31.0
माइल्ड	215	52.0
मॉडरेट	174	42.0
सीवियर	25	6.0

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

तालिका में महिलाओं को एनीमिक और गैर-एनीमिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है, और इसके भीतर एनीमिक महिलाओं की गंभीरता के स्तर (माइल्ड, मॉडरेट, सीवियर) को दिखाया गया है।

1. **कुल एनीमिक और गैर-एनीमिक महिलाएँ:**
    - कुल महिलाओं में 414 महिलाएँ एनीमिक पाई गईं, जो कुल आबादी का 69% है।जबकि 186 महिलाएँ गैर-एनीमिक थीं, जो कुल का 31% है।इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकांश महिलाओं में एनीमिया का प्रभाव मौजूद है, जो स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्या का संकेत है।
2. **एनीमिक महिलाओं में गंभीरता का स्तर:**

माइल्ड एनीमिया: 215 महिलाएँ, यानी 52%, हल्के स्तर की एनीमिया से प्रभावित हैं। यह प्राथमिक स्तर पर पोषण सुधार और सप्लीमेंटेशन द्वारा सुधारा जा सकता है.मॉडरेट एनीमिया: 174 महिलाएँ, यानी 42%, मध्यम स्तर की एनीमिया से पीड़ित हैं। इन महिलाओं को नियमित सप्लीमेंटेशन और चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता है।सीवियर (गंभीर) एनीमिया: 25 महिलाएँ, यानी 6%, गंभीर स्तर की एनीमिया से प्रभावित हैं। यह समूह तत्काल चिकित्सकीय हस्तक्षेप और निगरानी का आवश्यक संकेत देता है।तालिका से स्पष्ट होता है कि एनीमिया की समस्या व्यापक है, क्योंकि 69% महिलाओं में यह पाया गया।माइल्ड और मॉडरेट स्तर की महिलाओं का उच्च प्रतिशत (52% + 42% = 94%) यह दर्शाता है कि यदि समय पर पोषण और सप्लीमेंटेशन पर ध्यान दिया जाए, तो गंभीर मामलों को काफी हद तक रोका जा सकता है।सीवियर एनीमिया वाले 6% महिलाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि यह उनके स्वास्थ्य और दैनिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

आयु-समूह अनुसार एनीमिया का विवरण

तालिका

आयु-समूह अनुसार एनीमिया

आयु (वर्ष)	कुल (n)	एनीमिक (n)	एनीमिया %
15-19	70	52	74.3

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

20-29	220	156	70.9
30-39	200	132	66.0
40-49	110	74	67.3
कुल	600	414	69.0

एनीमिया एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, जो विशेष रूप से महिलाओं और किशोरियों में व्यापक रूप से पाई जाती है। यह स्थिति मुख्यतः शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी के कारण उत्पन्न होती है, जो ऑक्सीजन को शरीर में परिवहन करने की क्षमता को प्रभावित करती है। एनीमिया से प्रभावित महिलाएं थकान, कमजोरी, मानसिक और शारीरिक कार्यक्षमता में गिरावट, और अन्य स्वास्थ्य जटिलताओं से ग्रस्त हो सकती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर होती है, क्योंकि वहां पोषण की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित पहुँच, और शिक्षा का अभाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में एनीमिया की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए महिलाओं को विभिन्न आयु-समूहों में विभाजित किया गया है। इस तालिका में 600 महिलाओं का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें कुल 414 महिलाएं एनीमिक पाई गईं, जो कुल आबादी का 69% है। यह आंकड़ा स्पष्ट रूप से बताता है कि ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया का प्रभाव व्यापक और गंभीर है.तालिका के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं को चार आयु-समूहों में विभाजित किया गया है: 15-19 वर्ष, 20-29 वर्ष, 30-39 वर्ष, और 40-49 वर्ष। प्रत्येक आयु-समूह में एनीमिया की व्यापकता को देखा गया।

1. **आयु समूह 15-19 वर्ष**
    - इस समूह में कुल 70 महिलाएँ शामिल थीं।
    - इनमें से 52 महिलाएं एनीमिक पाई गईं, जिसका प्रतिशत 74.3% है।
    - किशोरियों में एनीमिया का यह उच्च प्रतिशत दर्शाता है कि पोषण संबंधी कमी और किशोरावस्था में आयरन की बढ़ी हुई आवश्यकता के कारण यह समूह विशेष रूप से संवेदनशील है।
    - यह समूह शारीरिक विकास और मासिक धर्म की शुरुआत के कारण उच्च जोखिम में रहता है, जिससे पोषण और आयरन की मांग अधिक होती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

2. **आयु समूह 20-29 वर्ष**
    - इस आयु-समूह में कुल 220 महिलाएँ शामिल थीं।
    - इनमें से 156 महिलाएं एनीमिक पाई गईं, जो 70.9% के लगभग है।
    - यह समूह प्रजनन आयु में आता है, इसलिए गर्भावस्था और प्रसव से संबंधित पोषण की मांग अधिक होती है।
    - उच्च प्रतिशत बताता है कि इस अवधि में पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी गंभीर एनीमिया की संभावना बढ़ा सकती है।
3. **आयु समूह 30-39 वर्ष**
    - इस समूह में कुल 200 महिलाएँ थीं।
    - इनमें से 132 महिलाएं एनीमिक पाई गईं, अर्थात 66%।
    - इस आयु-समूह में महिलाओं का अधिकांश भाग मातृत्व और घरेलू कार्यों में व्यस्त रहता है।
    - लगातार पोषण की कमी, मातृत्व से संबंधित खून की कमी और श्रम की अधिकता के कारण एनीमिया की संभावना बनी रहती है।
    - आंकड़े संकेत करते हैं कि महिलाओं के स्वास्थ्य पर घरेलू और आर्थिक जिम्मेदारियों का सीधा प्रभाव पड़ता है।
4. **आयु समूह 40-49 वर्ष**
    - इस आयु-समूह में कुल 110 महिलाएँ शामिल थीं।
    - इसमें 74 महिलाएं एनीमिक पाई गईं, जो 67.3% के बराबर है।
    - इस समूह में महिलाओं में थकान और शारीरिक कमजोरी सामान्य होती है।
    - उच्च प्रतिशत दर्शाता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ पोषण और स्वास्थ्य समस्याओं का प्रभाव भी बना रहता है।

तालिका और आंकड़ों का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं में एनीमिया का उच्च प्रतिशत (69%) है। किशोरियों और प्रजनन आयु की महिलाओं में यह समस्या अधिक गंभीर है। यह स्थिति स्वास्थ्य और पोषण दोनों क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता को उजागर करती है।समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि समय पर पोषण और सप्लीमेंटेशन से एनीमिया को नियंत्रित किया जा सकता है।स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच, जागरूकता, और महिला सशक्तिकरण इस समस्या के समाधान में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।नीति-निर्माण और कार्यक्रम कार्यान्वयन के लिए यह डेटा महत्वपूर्ण संकेत देता है कि आयु-समूह आधारित हस्तक्षेप आवश्यक हैं।इस प्रकार, आयु-समूह अनुसार एनीमिया का यह अध्ययन नीति-निर्माता, स्वास्थ्य अधिकारी, और शोधकर्ता सभी के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-6 | June - 2025 | Page 209-216

तालिका

शिक्षा स्तर अनुसार एनीमिया

शिक्षा	कुल (n)	एनीमिक (n)	एनीमिया %
बिना स्कूली शिक्षा	180	140	77.8
प्राथमिक तक	160	117	73.1
माध्यमिक	200	126	63.0
उच्च/स्नातक+	60	31	51.7
कुल	600	414	69.0

प्रस्तुत तालिका छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न आयु समूहों की महिलाओं में एनीमिया के वितरण को दर्शाती है। कुल 600 महिलाओं के अध्ययन में 414 महिलाएँ एनीमिक पाई गईं, जो कुल आबादी का 69% है। यह आंकड़ा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि ग्रामीण महिलाओं में एनीमिया व्यापक और गंभीर स्वास्थ्य समस्या है।आयु-समूह के अनुसार देखा जाए तो 15-19 वर्ष की किशोरियों में एनीमिया की दर सबसे अधिक है, जहाँ 70 महिलाओं में से 52 महिलाएँ प्रभावित हैं, यानी 74.3%। यह उच्च प्रतिशत किशोरियों में पोषण की कमी और आयरन युक्त आहार की अपर्याप्तता को दर्शाता है। 20-29 वर्ष की महिलाओं में 220 में से 156 महिलाएँ एनीमिक हैं, अर्थात 70.9%, जो प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया की उच्च दर को स्पष्ट करता है। 30-39 वर्ष के समूह में 200 में से 132 महिलाएँ एनीमिक पाई गईं (66.0%) और 40-49 वर्ष की महिलाओं में 110 में से 74 महिलाएँ प्रभावित हैं (67.3%)।

उपसंहार-

इस वितरण से यह स्पष्ट होता है कि किशोरियों और प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया सबसे अधिक पाया जाता है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा और श्रम क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इससे न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य प्रभावित होता है, बल्कि परिवार और समुदाय की

उत्पादकता और आर्थिक स्थिति पर भी असर पड़ता है। यह तालिका नीति-निर्माताओं के लिए लक्षित हस्तक्षेप और पोषण सुधार कार्यक्रमों के महत्व को उजागर करती है।

संदर्भ सूची

1. Jeevan, J., Karun, K. M., Puranik, A., et al. (2025). *Prevalence of anemia in India: a systematic review, meta-analysis and geospatial analysis*. *BMC Public Health, 25*, Article 1270. https://doi.org/10.1186/s12889-025-22439-3 (BioMed Central)
2. Let, S., Tiwari, S., Singh, A., Chakrabarty, M., & सहकर्मी (et al.). (2024). Prevalence and determinants of anaemia among women of reproductive age in Aspirational Districts of India: an analysis of NFHS 4 and NFHS 5 data. *BMC Public Health, 24*, Article 437. https://doi.org/10.1186/s12889-024-17789-3 (BioMed Central)
3. Status of Anaemia amongst women in India: trend analysis of NFHS data. (2023). *Indian Journal of Community Health, 35*(3), 354-358. https://doi.org/10.47203/IJCH.2023.v35i03.019 (iapsmupuk.org)
4. To what extent classic socio-economic determinants explain trends of anaemia in tribal and non-tribal women of reproductive age in India? Findings from four National Family Heath Surveys (1998-2021). (2023). *BMC Public Health, 23*, Article 856. https://doi.org/10.1186/s12889-023-15838-x (BioMed Central)
5. Anaemia and selected micronutrient deficiencies among young women in rural North India: A community-based study. (2024). *Journal of Family Medicine and Primary Care, 13*(10), 4424-4431. https://doi.org/10.4103/jfmpc.jfmpc_327_24 (Lippincott Journals)
6. Non-iron Deficiency Anemia in Rural Indian Women: A Cross-Sectional Study. (2022). *(published before 2023 but relevant for context)* Devbhoomi Dwarka, Gujarat. *PubMed*. https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov/36185907/ (PubMed)
7. Prevalence and Socioeconomic Determinants of Iron Deficiency Anemia among Adolescent Girls in Rural India. (2025). *European Journal of Cardiovascular Medicine, 15*(4), 231-234. https://doi.org/10.61336/ejcm/25-04-41 (healthcare-bulletin.co.uk)